UNNAT BHARAT ABHIYAN

Regional Coordinating Institute, Indian Institute of Technology Roorkee

(News Clipping)

दैनिक जागरण देहरादून/हरिद्वार, 25 सितंबर, 2020

चर्चा

सिंचाई जल दक्षता बढ़ाने के लिए इन्हेंसिंग इरीगेशन वाटर यूज एफिशिएंसी विषय पर वेबिनार

बेहतर कृषि पद्धतियों से जल दक्षता में वृद्धि है संभव

जागरण संवाददाता, रुड़की: सिंचाई क्षमता एवं तकनीक में वृद्धि, सही फसल का चयन एवं बेहतर कृषि पद्धतियों का उपयोग करके खेती में जल दक्षता को बढ़ाया जा सकता है।

यह विचार उन्नत भारत अभियान, क्षेत्रीय समन्वय संस्थान-भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) रुड़की के तत्वावधान में सिंचाई जल दक्षता बढ़ाने के संबंध में इन्हेंसिंग इरीगेशन वाटर यूज एफिशिएंसी विषय पर वेबिनार में विशेषज्ञों ने व्यक्त किए। वेबिनार में मुख्य वक्ता के रूप में जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार में अतिरिक्त सचिव एवं राष्ट्रीय जल मिशन कार्यक्रम के मिशन डायरेक्टर जी अशोक कुमार उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि भारत में जहां दुनिया की कुल आबादी की 18 फीसद जनसंख्या निवास करती है। वहीं दुनिया में उपलब्ध कुल स्वच्छ पेयजल की सिर्फ चार फीसद उपलब्धता है। इस पेयजल का 85-89 फीसद भाग हम कृषि में सिंचाई के रूप में उपयोग करते हैं।

विषय विशेषज्ञों ने जल दक्षता में वृद्धि को वर्तमान की सबसे बड़ी महत्वपूर्ण और बड़ी आवश्यकता बताया गया

यदि हम इस सिंचाई जल का 10 फीसद भाग भी बचाने में सफल हो जाते हैं तो यह एक सार्थक प्रयास होगा। कहा कि चीन, ब्राजील एवं अमेरिका जैसे दुनिया के प्रमुख कृषि उत्पादक देशों के मुकाबले हमारे देश में प्रति इकाई अनाज उत्पादन में दो से तीन गुना पानी की खपत होती है। इसके लिए हमें जल दक्षता क्षमता बढ़ाने की अत्यंत आवश्यकता है। बताया कि केंद्रीय जल आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार यदि हम सिर्फ सिंचाई के क्षेत्र में ही जल दक्षता को बढ़ाने में सफल हो जाते हैं तो लगभग 20 फीसद जल की बचत की जा सकती है। आइआइटी रुड़की के एसआरआइसी डीन प्रो. मनीष श्रीखंडे ने कहा कि दुनिया की दूसरी बड़ी आबादी वाला देश होने तथा सीमित भू एवं जल संसाधनों को देखते हुए देश के सामने सभी नागरिकों को खाद्य सुरक्षा उपलब्ध कराना एक बड़ी चुनौती है। इसके लिए जल दक्षता में वृद्धि करना वर्तमान की सबसे बड़ी व महत्वपूर्ण आवश्यकता है। संस्थान के जल संसाधन विकास एवं प्रबंधन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. एमएल कंसल ने कहा कि अब इस बात को किसानों ने भी सही तरीके से समझ लिया है कि ज्यादा पानी देने से नहीं बल्कि पानी की उचित मात्रा देने से बेहतर फसल उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। क्षेत्रीय समन्वयक प्रो. आशीष पाण्डेय ने भी विचार रखे। वेबिनार में उन्नत भारत अभियान कार्यक्रम के पश्चिमी उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड राज्य के सहभागी संस्थानों के समन्वयक, आइआइटी रुड़की के छात्र, प्राध्यापक व अन्यों ने प्रतिभाग किया।

हरिद्वार की और भी खबरें पढ़ें www.jagran.com पर